www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेईमानी का नहीं, ईमानदारी का मार्ग अपनायें

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

श्री राम शर्मा आचार्य

युग निर्माण योजना
मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेईमानी का नहीं, ईमानदारी का मार्ग अपनायें

लगता ऐसा है कि जल्दी और अधिक कमाने के लिए बेईमानी का प्रयोग करना आवश्यक है। क्योंकि धनवान् लोगों में से अधिकांश ऐसे दीखते हैं, जिनके क्रिया-कलाप में बेईमानी का पुट रहता है। ईमानदार लोगों में से बहुत गरीब दीखते हैं, इसलिए सामान्य बुद्धि से यही प्रतीत होता है कि हम भी ईमानदार रहेंगे तो गरीब बन जायेंगे। चूँकि इन दिनों धन की प्रमुखता है। धन के आधार पर ही अधिक सुविधा-साधन और सफलता, सम्मान की उपलब्धि होती है। इसलिए मोटी बुद्धि से स्थिति का अवलोकन करने वाले और बहुसंख्यक जिस रास्ते चलें, उसी पर चलने वाले लोग आमतौर से उसी ढर्रे को अपना लेते हैं, जो पास-पड़ौस के लोग अपनाते दीखते हैं। आज की व्यापक क्षेत्र में फैली हुई बेईमानी का यही प्रधान कारण है।

वस्तुस्थिति को बारीकी से तलाश करने पर बुद्धि-भ्रम हो जाना स्वाभाविक है। बेईमानी की गरिमा स्वीकार करके लोग बुद्धि भ्रम से ही ग्रस्त हुए हैं। वास्तविकता वैसी है नहीं। बेईमानी से धन नहीं कमाया जा सकता। कमा लिया जाय तो स्थिर नहीं रखा जा सकता। बेईमानी की आड़ में कुछ अनुपयुक्त लाभ प्राप्त कर लिया जाय तो इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि उसका परिणाम लाभदायक होता है। साहस, परिश्रम, सूझ-बूझ, मधुर भाषण, व्यवस्था आदि वे गुण हैं, जो उपार्जन करते हैं। बेईमानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो अपयश, अविश्वास, घृणा, असहयोग, राजदण्ड, आत्म-ग्लानि आदि दुष्परिणाम ही उत्पन्न करती है। वस्तुतः लोग सद्गुणों के आधार पर कमाते हैं। बेईमानी का तात्पर्य है दूसरों को धोखा देना, यह तभी सम्भव है जब उस पर ईमानदारी का आवरण चढ़ा हो। किसी को ठगा तभी जा सकता है, जब उसे अपनी ईमानदारी एवं विश्व-सनीयता के बारे में आश्वत कर दिया जाय। यदि किसी को यह शक हो जाय कि हमारे साथ बेईमानी करने के लिए ताना बाना बुना जा रहा है तो वह ठगाई में न आयेगा और चालाकी से मिलने वाला लाभ न मिल सकेगा। बेई-मानी तभी लाभदायक हो सकती है, जब वह ईमानदारी की आड़ में भली प्रकार छिपा ली जाय। असलियत जैसे ही प्रकट हुई, बेईमानी करने वाला न केवल उस समय के लिये वरन् सदा के लिये उन लोगों से अपना विश्वास खो बैठता है और लाभ कमाने के स्थान पर उल्टा घाटा उठाता है।

बेईमानी का प्रतिफल घृणा, अविश्वास असहयोग, राजदण्ड और आत्मदण्ड है, उसमें उपार्जन की कोई क्षमता नहीं। उपार्जन तो सद्गुण करते हैं। उन्हीं में उत्पादक तत्वों का समावेश है। संसार में बड़े काम, बड़े व्यापार, बड़े आयोजन ईमानदारी के आधार पर जमे, बढ़े और सफल हुए हैं। जिसने अपनी विश्वस्तता का सिक्का दूसरों पर जमा दिया, अच्छी, सही, खरी चीजें उचित मूल्य पर दीं और व्यवहार में प्रामाणिकता सिद्ध कर दी, लोग उस पर मुग्ध हो गए और सदा-सर्वदा के लिये उसके ग्राहक, प्रशंसक एवं सहयोगी बन गए। उन्नति का रहस्य यही है। जिसकी प्रामाणिकता है, उसका भविष्य उज्ज्वल है। किन्तु जो अपनी मूर्खता के कारण बदनाम हो गया उसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ईश्वर ही रक्षक है। आज के मित्र, कल के दुश्मन बनेंगे, कल के मित्र परसों घृणा करने लगेंगे और अन्ततः उसका कोई सच्चा सहयोगी न रह जायेगा। स्वार्थ के लिए चाप-लूसी करने वाले भी आड़े वक्त काम न आयेंगे।

हमें यह भ्रम निकाल ही देना चाहिए कि बेईमानी कुछ कमा सकती है। वह शराब की तरह उत्तेजना मात्र है, जिससे ठगने वाला और ठगा जाने वाला दोनों बुद्धि भ्रम में ग्रस्त हो जाते हैं। नशा उतरने पर नशेबाज की जो खस्ता हालत होती है, वही पोल खुलने पर बेईमान की होती है। उसका न कारोबार रहता है, न कोई ग्राहक सहयोगी। दूध में पानी और घी में बेजीटेबिल मिलाने वाला तभी कमा सकता है जब वह कसम खा-खाकर अपनी ईमानदारी और चीज के असलीपन का विश्वास दिलाता रहे। यह ईमानदारी और विश्वास की विजय है। जो कमाया गया उसका आधार यही था। यदि वे लोग अपनी दुकान पर पानी और अरारोट मिला दूध, मिलावटी घी का साइनबोर्ड लगावें और अपनी वस्तु के दोषों को प्रकट कर दें, तब पता चले कि क्या बेईमानी अपने विशुद्ध रूप में कुछ कमा सकने में समर्थ है।

वेस्ट एण्ड वाच कम्पनी की घड़ियाँ, फोर्ड मोटरें, पार्कर के पैन लोग मँहगे होने पर भी खुशी-खुशी खरीदते हैं, क्योंकि वस्तु की प्रामाणिकता पर हर कोई भरोसा करता है। उनकी दिन प्रतिदिन उन्नति होती चली जा रहा है। इसके विपरीत नकली कमजोर, खराब चीजें बेचने वाले आये दिन दिवालिया होते रहते हैं। पूँजी गंवा बैठते हैं और फिर उस बदनामी के कारण नया काम कर सकने में भी सफल नहीं होते। बेईमानी देर तक छिपी नहीं रह सकती। पारे को पचाया नहीं जा सकता और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाप छिपाया नहीं जा सकता है।

व्यापार की ही भाँति जीवन के हर क्षेत्र की सफलता का स्थायित्व कठोर श्रम, सद्गुण, सद्व्यवहार, सचाई, ईमानदारी एवं प्रामाणिकता पर निर्भर रहता है। चोर, डाकू, जुआरी, गिरहकट आये दिन बहुत पैसा कमाते रहते हैं पर उस कमाई को स्थिर रखना या सदुपयोग करना उनके बस की बात नहीं होती। बादल की छाँह की तरह अनीति की कमाई भी अपव्यय और दुर्व्यसनों में देखते-देखते समाप्त हो जाती है।

सम्पत्ति से नहीं, सद्बुद्धि और सत्प्रवृत्तियों में उन्नति होती है। धनवान् नहीं, चरित्रवान् सुख पाते हैं। ईमानदारी से यदि कम भी कमाया जाय तो वह अनीति से अधिक कमाने की अपेक्षा अधिक श्रेयस्कर है। पसीने की कमाई फलती-फूलती है और हराम का पैसा पानी के बबूले की तरह नष्ट हो जाता है। इतना ही नहीं, विदाई के बाद वह बहुत पश्चात्ताप, सन्ताप और अपयश छोड़कर जाता है।

यदि बेईमानी से ही धन कमाया जाता है तो आवश्यक नहीं कि धनवान ही बना जाय। संसार में अधिकांश गरीब ही रहते हैं। हम भी उन्हीं में से एक रहें तो क्या हर्ज है? किन्तु वास्तविकता यह है कि धन की नहीं, स्वास्थ्य, सन्तोष और सम्मान के क्षेत्रों में भी समृद्ध और सफल चरित्रवान् एवं ईमानदार लोग ही बनते हैं। सफलता प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं, उससे आत्म-सन्तोष और जन-कल्याण एवं स्वस्थपरम्परा का अभिवर्धन होना चाहिए। सही तरीके से प्राप्त की हुई सफलता ही वास्तविक सफलता है। यदि किसी ने कोई उन्नति या उपलब्धि अनुपयुक्त रीति से प्राप्त की है तो उससे अनेकों को वैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही करने की इच्छा उत्पन्न होगी और समाज में एक ऐसी प्रथा चल पड़ेगी, जो हर किसी के लिये अहितकर परिणाम ही उत्पन्न करती रहे।

सद्गुणों की खाद और सचाई का पानी पीकर ही व्यक्तित्व का पौधा बढ़ता और फलता-फूलता है। जादू से हथेली पर सरसों जमाई तो जा सकती है, कौतुक तो देखा जा सकता है पर उसका तेल निकालकर धन कमाया जा सके, ऐसा सम्भव नहीं होता। बेईमानी का चमत्कार तो देखा जा सकता है पर उसके सहारे सच्ची वीरता, प्रगति और स्थिर सम्पदा का लाभ नहीं उठाया जा सकता। यदि हम वस्तुतः कुछ कहने लायक और आनन्द दे सकने लायक उपलब्धियाँ प्राप्त करना चाहते हैं तो एक ही रास्ता है कि हम ईमानदारी और भलमनसाहत को जीवन-नीति की तरह हृदयङ्गम करें सद्गुणों की सम्पदा से अपने व्यक्तित्व को सुसज्जित करते चलें। जिस प्रकार रुपये के बदले दूकानों पर बिकने वाली चीजें आसानी से खरीदी जा सकती हैं उसी प्रकार सद्गुणों के मूल्य पर प्रगति की किसी भी दिशा में द्रुतगति से अग्रसर हुआ जा सकता है।

बेईमानी की रीति-नीति स्वीकार करने का प्रतिफल अपने लिये विपत्ति और समाज के लिये दुर्गति के रूप में ही प्रस्तुत होगा। बेईमानी के दुष्परिणामों के अनुभव के आधार पर चलने की अपेक्षा यही अच्छा है कि इस मार्ग पर चलने वालों की दुर्गति देखें और उतने से ही सावधानी बरतने लग जायें। इतिहास के किसी भी पृष्ठ पर यह तथ्य देखा जा सकता है कि विभूतियों और सम्पत्तियों का लाभ केवल उनके लिये सुरक्षित रहता है, जो सद्गुणी, चरित्रवान् और ईमानदार हैं।

'ईमानदारी का परित्याग न करें' पुस्तिका से।

युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा। मू० १७

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt.Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org